International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 02(II), April- June, 2025, pp. 162-166

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी विद्यार्थियों पर सहायक सामग्री के उपयोग एवं कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. सुनील कुमार[1*] | डिम्पल गोयल[2]

[1]निर्देशक, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर राजस्थान।
[2]शोधार्थी, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर राजस्थान।

*Corresponding Author: dimplegoyal14012005@gmail.com

सार

हम सभी को अपने उन अध्यापकों की याद है जिन्होंने हमें विद्यालय अथवा महाविद्यालय के दिनों में पढ़ाया था। उनमें से कुछ हमारी दृष्टि में अच्छे थे तथा कुछ अन्य इतने अच्छे नहीं थे। आइए, विश्लेषण कर के देखें कि हम उन्हें अच्छा क्यों मानते थे? हाँ, वे हमारा ध्यान रखते थे, उनकी हमसे सहानुभूति थी तथा वे अच्छे लगते थे, तथा साथ–साथ पढ़ाते भी अच्छा थे। उन सबमें एक बात सर्वनिष्ठ थी कि वे अध्यापन अधिगम को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए नई विधियाँ, नई तकनीक और अध्यापन–अधिगम सामग्री (Teaching Learning Materials-TLMs) का प्रयोग करते थे। अध्यापन–अधिगम सामग्रियाँ (टी.एल.एम.), जिन्हें शिक्षण सहायक सामग्री भी कहा जाता है, एक अध्यापक द्वारा अध्यापन– अधिगम क्रियाकलाप आरंभ करने से पूर्व निर्मित अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में उसकी सहायता करती हैं।

***शब्दकोशः** शिक्षक प्रशिक्षण, टी.एल.एम., अध्यापक, मौलिक यन्त्र, शून्य लागत।*

प्रस्तावना

वर्तमान इकाई में हम आपका परिचय विभिन्न प्रकार की अध्यापन–अधिगम सामग्रियों से कराएँगे जिनका प्रयोग कक्षा अध्यापन–अधिगम को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त हम यह भी स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे कि स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों से कम लागत या शून्य लागत की अध्यापन अधिगम सामग्री कैसे बनाई जा सकती है? इस कार्य में विद्यार्थियों को सम्मिलित करना उनके लिए आनुभविक अधिगम होगा। परंतु इसे कैसे करें? इस बात के लिए यह इकाई आपका मार्गदर्शन करेगी।

समस्या का औचित्य

दृश्य–श्रव्य सामग्री द्वारा सम्पूर्ण कक्षागत व्यवहार को परिवर्तित किया जाता है जो प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने के द्वारा प्राप्त होते हैं। अधिकांश दृश्य–श्रव्य साधन बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करते हैं क्योंकि यह बच्चों को कुछ–कुछ करने का अवसर देते हैं। किसी मॉडल को छूने, किसी बटन को दबाने अथवा किसी यन्त्र को घुमाने का अवसर मिलने पर छात्रा या छात्र बहुत खुश होते हैं और इसका उन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। प्राचीनकाल सम्बन्धी ऐतिहासिक घटनाओं को चित्रों मॉडलों या फिल्मस्ट्रीप द्वारा दर्शाया जा सकता है और बालक को प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं। महत्वपूर्ण बातों को या मौलिक यन्त्र रचना को समझने या उस पर जोर देने के लिए प्रायः ऐसे मॉडलों का प्रयोग किया जाता है जो कि बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान कर उनके व्यवहार में परिवर्तन प्रदान करता है।

समस्या कथन

''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी विद्यार्थियों पर सहायक सामग्री के उपयोग एवं कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव का अध्ययन''

शोध उद्देश्य

- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्रों एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग के प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्रों एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव के विश्लेषण का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

विश्लेषण

परिकल्पना संख्या – (1)

''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 1: शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग के प्रभाव का अध्ययन

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	सार्थकता का स्तर
शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ	250	68.26	7.35	1.10	स्वीकृत
ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ	250	66.20	7.05		

(डी. एफ. 735 का टी सारणी मान 0.05 पर 1.75 तथा 0.10 पर 2.85)

उपरोक्त सारणी तथा ग्राफ संख्या 1 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री के उपयोग के प्रभाव का मध्यमान 68.26, मानक विचलन 7.35 तथा ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री के उपयोग के प्रभाव का मध्यमान 66.20, मानक विचलन 7.05 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान का अन्तर 1.10 पाया गया है जो डी.एफ. 735 टी सारणी मान पर 0.05 पर 1.10 प्राप्त हुआ है। अतः सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना संख्या–(1) स्वीकृत की जाती है।

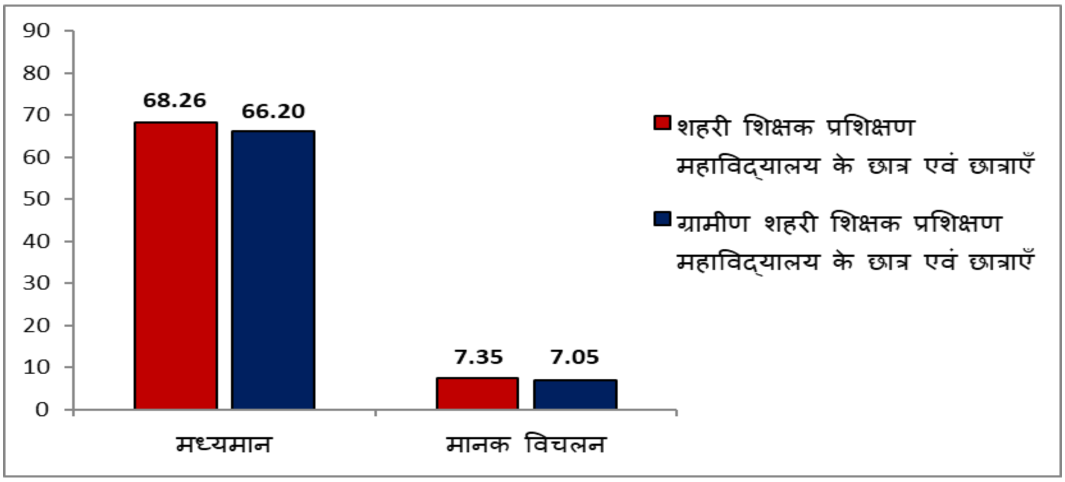

ग्राफ 1

(शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग के प्रभाव के मध्य अन्तर को दर्शाता हुआ ग्राफ)

- शहरी शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ – लाल रंग
- ग्रामीण शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राए – नीला रंग

प्रस्तुत ग्राफ में शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं को लाल रंग तथा ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं को नीले रंग से दर्शाया गया है।

परिकल्पना संख्या – (2)

''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 2: शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव का अध्ययन

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	मध्यमान का अन्तर	सार्थकता का स्तर
शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ	250	65.13	6.91	1.87	स्वीकृत
ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ	250	62.92	6.03		

(डी. एफ. 735 का टी सारणी मान 0.05 पर 1.75 तथा 0.10 पर 2.85)

उपरोक्त सारणी तथा ग्राफ संख्या 2 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव का मध्यमान 65.13, मानक विचलन 6.91 तथा ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव का मध्यमान 62.92, मानक विचलन 6.03 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्यमान का अन्तर 1.87 पाया गया है जो डी.एफ. 735 टी सारणी मान पर 0.10 पर 1. 87 प्राप्त हुआ है। अतः सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना संख्या–(2) स्वीकृत की जाती है।

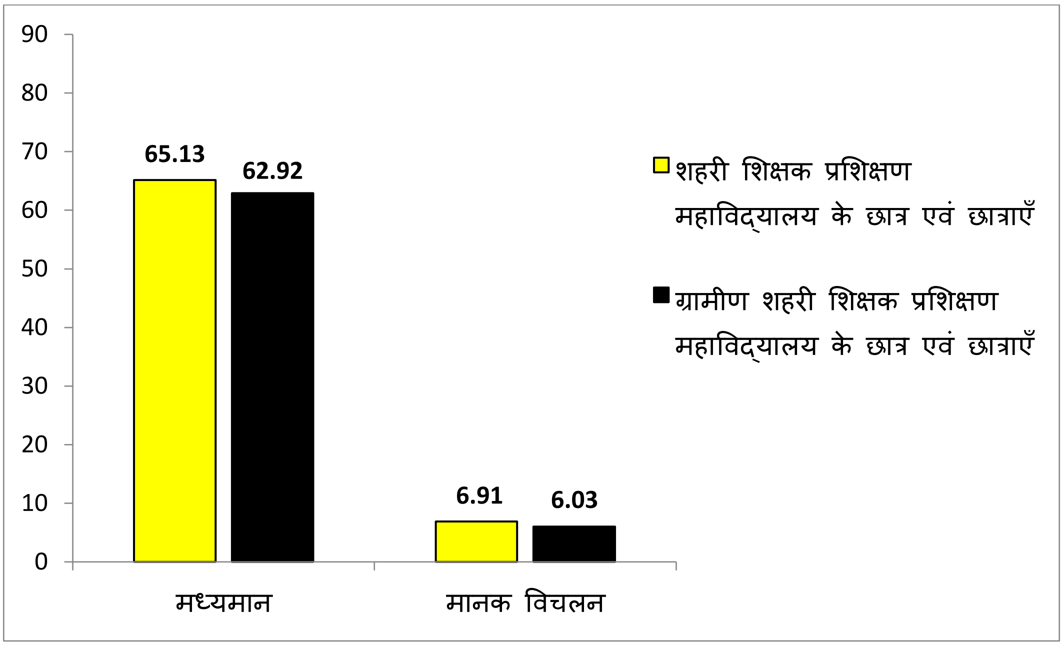

ग्राफ 2

(शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव को दर्शाता हुआ ग्राफ)

- शहरी शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ – पीला रंग
- ग्रामीण शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राए – काला रंग

प्रस्तुत ग्राफ में शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं को पीले रंग तथा ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं को काले रंग से दर्शाया गया है।

निष्कर्ष

आंकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात् यह पाया गया कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। शोध में चर्चानित न्यादर्श के दोनों समूहों (शहरी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ, ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ) दोनों के सहायक सामग्री उपयोग के आधार में मध्यमान एवं मानक विचलन समान्तम् रूप में पाए गए है। दोनों के मध्यमान का अन्तर निर्धारित मानकों से बहुत कम है जो समानता को दर्शाता है। अतः हम निष्कर्ष में कह सकते है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। वर्णित तथ्य दोनों वर्गों के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा समान स्तर पर प्राप्त हुए है। अतः टी मूल्य में दोनों सार्थकता स्तर पर समान पाए गए है।

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। शोध में चयनित दोनों न्यादर्श समूहों यथा शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ दोनों के सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव में समानता पाई गई है जो प्राप्त मध्यमान एवं मानक विचलन पर दिखाई दे रही है। अतः हम निष्कर्ष में कह सकते हैं कि शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं पर सहायक सामग्री उपयोग से कक्षागत व्यवहार परिवर्तन पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। वर्णित तथ्य दोनों वर्गों के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा समान स्तर पर प्राप्त हुए है। अतः टी मूल्य में दोनों सार्थकता स्तर पर समान पाए गए हैं।

सन्दर्भ ग्रंन्थ सूची

1. आर्य, एस. पी. (1971); *सामाजिक सर्वेक्षण की विधियाँ* (प्रथम संस्करण). आगराः साहित्य भवन.
2. कौल, लौकेश (2009); *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली.* (तृतीय पुर्नमुद्रण). नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.।
3. गुप्ता, अलका पुस्तक भवन. (2011); *शैक्षिक संतुष्टि* (प्रथम संस्करण). इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
4. गुप्ता, एस. पी. एवं अलका गुप्ता (2008); *व्यवहार परक विज्ञानों में सांख्यिकी विधियाँ.* (चतुर्थ संस्करण). इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
5. गुप्ता, एस. पी. एवं अलका गुप्ता (2010): *आधुनिक मापन एवं मूल्याकंन.* (परिवर्धित संस्करण). इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
6. गुप्ता, एस. पी. एवं अलका गुप्ता (2018): *संरल अनुसंधान परिचय,* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

❖◆❖